Result Mitra Daily Magazine

ज्योतिराव फूले

❖ चर्चा में क्यों ?

- 28 नवंबर 1890 को 63 वर्ष की अवस्था में महान समाज सुधारक ज्योतिराव गोविंदराव फूले की मृत्यु हो गई।
- ज्योतिराव फूले ने अस्पृश्यता और जाति व्यवस्था जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ काम किया एवं महिला सशक्तिकरण और बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

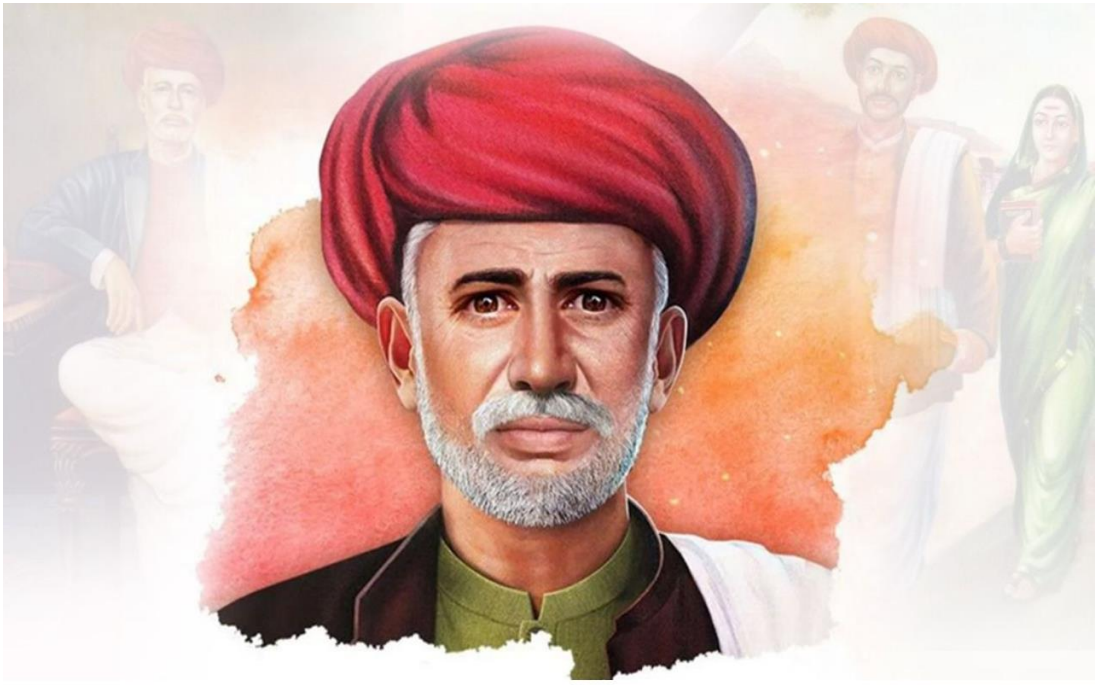

❖ आरंभिक जीवन :

- ज्योतिराव फूले का जन्म 11 अप्रैल 1827 ई. को महाराष्ट्र के सतारा जिले में खाटुगन गांव में एक माली (Gardner) परिवार में हुआ था।
- माली के घर में जन्म ले होने के कारण लोग उन्हें 'फूले' कहकर बुलाने लगे।
- एक वर्ष की अवस्था में ही ज्योतिराव फूले की मां का देहांत हो गया, जिसके बाद उनका लालन-पालन एक बायी ने किया।

- ज्योतिराव फूले की प्रारंभिक पढ़ाई मराठी भाषा में हुई, बीच में कुछ समय उनकी पढ़ाई छूटने के कारण 21 वर्ष की उम्र में अंग्रेजी मीडियम से सातवीं कक्षा की पढ़ाई पूरी की।
- वर्ष 1840 में 23 वर्ष की अवस्था में उनकी शादी सावित्रीबाई से हुई, जो आगे चलकर एक प्रसिद्ध समाजसेवी बनी।

❖ सामाजिक कार्य :

- 1848 में ज्योतिराव फूले ने निचली जातियों के लिए समान सामाजिक और आर्थिक लाभ दिलाने के लिए अपने अनुयायियों के साथ 'सत्यशोधक समाज' का गठन किया।
- सत्यशोधक समाज का शाब्दिक अर्थ ''सत्य के खोजी'' है।
- महाराष्ट्र के दलितों के सामाजिक–आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए समर्पित "सत्यशोधक समाज" को कोल्हापुर राज्य के मराठा शासक छत्रपति शाहू ने भी समर्थन दिया।
- कई इतिहासकारों का मानना है कि ज्योतिराव फूले ने ही सर्वप्रथम 'दलित' शब्द का प्रयोग उत्पीड़ित जनता के चित्रण के लिए किया।
- वर्ष 1848 ई. में ज्योतिराव फूले और उनकी पत्नी सावित्रीबाई ने मिलकर पुणे के भिडेवाड़ा में लड़कियों के लिए भारत का पहला विद्यालय खोला।
- लड़कियों के लिए पहला विद्यालय खुलने के बाद पुणे में शूद्रों और अति–शूद्रों (पिछड़ी जातियों और दलितों) के लिए कई स्कूल खोले गए।
- समाज के कमजोर वर्गों एवं महिला सशक्तिकरण के लिए किए गए ज्योतिराव फूले के समाजसेवा के कारण 11 मई 1888 को एक महाराष्ट्रीयन सामाजिक कार्यकर्ता विट्ठलराव कृष्णाजी वंदेकर द्वारा ज्योतिराव फुले को "महात्मा" की उपाधि से सम्मानित किया गया था।
- ज्योतिराव फूले ने विधवाओं और महिलाओं के उत्थान के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- अपने जीवन काल में ज्योतिराव फूले ने कई पुस्तकें लिखी, जिनमें गुलामगिरी, तृतीय रत्न, छत्रपति शिवाजी, राजा भोसला का पखड़ा, किसान का कोड़ा, अछूतों की कैफियत काफी प्रसिद्ध हुई।
- वर्ष 1883 में ब्रिटिश सरकार ने ज्योतिराव फूले के स्त्रियों की शिक्षा एवं महिला सशक्तिकरण के लिए किए गए महान कार्य के लिए "स्त्री शिक्षण के आद्यजनक" कहकर गौरव प्रदान किया।

❖ सावित्रीबाई फूले :

- ज्योतिराव फूले की तरह ही सावित्रीबाई भी माली समुदाय की एक दलित महिला थी, जिनका जन्म 3 जनवरी 1831 ई. को महाराष्ट्र के नायगांव में हुआ था।
- सावित्रीबाई भी ज्योतिराव फूले की तरह एक समाजसेवी थी।
- सावित्रीबाई फूले ने भेदभाव का सामना करने वाली गर्भवती विधवाओं के लिए "बाल हत्या प्रतिबंधक गृह" शुरू किया।

- सावित्रीबाई फूले ने अन्य सामाजिक मुद्दों के अलावा अंतर जातीय विवाह, विधवा पुनर्विवाह और बाल विवाह, सती प्रथा और दहेज प्रथा के उन्मूलन की वकालत की।
- 28 नवंबर 1890 को अपने पति ज्योतिराव फूले के निधन के बाद भी उन्होंने अपने सामाजिक सुधार कार्यक्रमों को जारी रखा।
- सावित्रीबाई फूले ने महाराष्ट्र में 1896 के दौरान अकाल और 1897 के बुबोनिक प्लेग के दौरान राहत कार्यों का संचालन किया।

बुबोनिक प्लेग के दौरान राहत कार्य चलाने के क्रम में सावित्रीबाई फूले इस बीमारी के चपेट में आ गई, जिसके कारण 10 मार्च 1897 में उनकी